पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 29

प्रश्न बैंक

अध्याय 29: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 29: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सहायक पाठ (जीवनी)

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था। वे बचपन से ही बहुत मेधावी थे और हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता से कानून की पढ़ाई की और कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की, बाद में पटना में वकालत करने लगे।

आरंभ में वे गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे, पर बाद में महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से सबसे अधिक प्रभावित हुए और उनके सच्चे शिष्य बन गए। सन् 1917 में वे चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी के साथ थे। वे तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने और 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए।

26 जनवरी 1950 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक इस पद पर रहे। वे सादगी और सरलता के प्रतीक थे। उनका मानना था कि सच्चा प्रजातंत्र वही है जो संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता दे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला और 28 फरवरी 1963 को पटना में उनका निधन हो गया।

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

3 दिसंबर 1884: बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में जन्म।

विद्यार्थी जीवन: हर परीक्षा में प्रथम स्थान पाया।

1917: चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी के साथ शामिल हुए।

1934, 1939 और 1947: कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

11 दिसंबर 1946: संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए।

26 जनवरी 1950: भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

1950-1962: बारह वर्षों तक राष्ट्रपति रहे।

1962: भारत रत्न से सम्मानित हुए।

28 फरवरी 1963: पटना में निधन।

परिचय

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति थे। वे महात्मा गांधी के निष्ठावान शिष्य और संविधान सभा के अध्यक्ष थे। अपनी सादगी और सरलता के कारण वे किसान जैसे व्यक्तित्व वाले नेता माने जाते थे।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
सर्वोत्कृष्ट	सबसे अच्छा
निरस्त्रीकरण	हथियारों पर रोक लगाना
वैरभाव	दुश्मनी का भाव

birlaeducation.org

भ्रातृत्व	भाईचारे की भावना
हासिल	प्राप्त
उतावलेपन	जल्दीबाजी
अंततोगत्वा	अंत में जाकर
श्रोताओं	सुनने वालों
संतोषजनक	संतोष को जन्म देने वाला
निरंतर	लगातार
व्यापक	फैला हुआ
सादगी	सरल जीवन

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म कब हुआ?

(क) 3 दिसंबर 1884

(ख) 3 दिसंबर 1885

(ग) 13 दिसंबर 1884

(घ) 3 नवंबर 1884

उत्तर: (क) 3 दिसंबर 1884

---

2. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म किस राज्य में हुआ?

(क) उत्तर प्रदेश

(ख) बिहार

(ग) पश्चिम बंगाल

(घ) झारखंड

उत्तर: (ख) बिहार

---

3. राजेन्द्र प्रसाद भारत के कौन से राष्ट्रपति थे?

(क) दूसरे

(ख) पहले

(ग) तीसरे

(घ) चौथे

उत्तर: (ख) पहले

---

4. राजेन्द्र प्रसाद कितने वर्षों तक राष्ट्रपति रहे?

birlaeducation.org

(क) पाँच

(ख) दस

(ग) बारह

(घ) पंद्रह

उत्तर: (ग) बारह

---

5. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष कब चुने गए?

(क) 11 दिसंबर 1946

(ख) 26 जनवरी 1950

(ग) 15 अगस्त 1947

(घ) 9 दिसंबर 1946

उत्तर: (क) 11 दिसंबर 1946

---

6. राजेन्द्र प्रसाद सबसे अधिक किससे प्रभावित थे?

(क) गोपाल कृष्ण गोखले

(ख) जवाहरलाल नेहरू

(ग) महात्मा गांधी

(घ) बाल गंगाधर तिलक

उत्तर: (ग) महात्मा गांधी

birlaeducation.org

---

7. राजेन्द्र प्रसाद को भारत रत्न कब मिला?

(क) 1950

(ख) 1954

(ग) 1962

(घ) 1963

उत्तर: (ग) 1962

---

8. राजेन्द्र प्रसाद किस आंदोलन में गांधीजी के साथ थे?

(क) नमक सत्याग्रह

(ख) चंपारण सत्याग्रह

(ग) भारत छोड़ो आंदोलन

(घ) असहयोग आंदोलन

उत्तर: (ख) चंपारण सत्याग्रह

---

9. राजेन्द्र प्रसाद का निधन कब हुआ?

(क) 28 फरवरी 1963

(ख) 28 फरवरी 1962

(ग) 3 दिसंबर 1963

(घ) 13 मई 1962

उत्तर: (क) 28 फरवरी 1963

---

10. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार सच्चा प्रजातंत्र किसे कहते हैं?

(क) जो केवल बहुमत का शासन हो

(ख) जो संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता दे

(ग) जो केवल चुनाव कराए

(घ) जो सेना से चले

उत्तर: (ख) जो संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता दे

---

11. राजेन्द्र प्रसाद ने वकालत कहाँ से शुरू की?

(क) पटना

(ख) दिल्ली

(ग) कलकत्ता उच्च न्यायालय

(घ) इलाहाबाद

उत्तर: (ग) कलकत्ता उच्च न्यायालय

birlaeducation.org

---

12. राजेन्द्र प्रसाद कितनी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने?

(क) एक

(ख) दो

(ग) तीन

(घ) चार

उत्तर: (ग) तीन

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर _____ को बिहार में हुआ था।

उत्तर: 1884

---

2. राजेन्द्र प्रसाद हर परीक्षा में _____ आते थे।

उत्तर: प्रथम

---

3. राजेन्द्र प्रसाद _____ के निष्ठावान शिष्य थे।

उत्तर: महात्मा गांधी

---

4. राजेन्द्र प्रसाद _____ को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए।

उत्तर: 11 दिसंबर 1946

---

5. राजेन्द्र प्रसाद 26 जनवरी 1950 को भारत के पहले _____ बने।

उत्तर: राष्ट्रपति

---

6. राजेन्द्र प्रसाद _____ वर्षों तक राष्ट्रपति रहे।

उत्तर: बारह

---

7. राजेन्द्र प्रसाद को सन् _____ में भारत रत्न मिला।

उत्तर: 1962

---

8. राजेन्द्र प्रसाद का निधन 28 फरवरी _____ को हुआ।

उत्तर: 1963

---

9. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार समस्त _____ एक है।

उत्तर: मानवता

---

birlaeducation.org

10. राजेन्द्र प्रसाद एकपक्षीय _____ निरस्त्रीकरण के पक्ष में थे।

उत्तर: परमाणु

---

3. सही / गलत

1. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार में हुआ था।

उत्तर: सही।

---

2. राजेन्द्र प्रसाद भारत के दूसरे राष्ट्रपति थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजेन्द्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति थे।

---

3. राजेन्द्र प्रसाद बारह वर्षों तक राष्ट्रपति रहे।

उत्तर: सही।

---

4. राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के निष्ठावान शिष्य थे।

उत्तर: सही।

---

5. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष नहीं थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजेन्द्र प्रसाद 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए थे।

---

6. राजेन्द्र प्रसाद को भारत रत्न 1962 में मिला।

उत्तर: सही।

---

7. राजेन्द्र प्रसाद हिंसा के समर्थक थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजेन्द्र प्रसाद अहिंसा के पक्षधर थे और सभी प्रकार की हिंसा से बचने पर बल देते थे।

---

8. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार सच्चा प्रजातंत्र सभी को प्रसन्नता देता है।

उत्तर: सही।

---

9. राजेन्द्र प्रसाद का निधन 1963 में हुआ।

उत्तर: सही।

---

10. राजेन्द्र प्रसाद केवल एक बार कांग्रेस अध्यक्ष बने।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजेन्द्र प्रसाद तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने: 1934, 1939 और 1947 में।

---

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था? पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था।

---

2. राजेन्द्र प्रसाद विद्यार्थी के रूप में कैसे थे? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद विद्यार्थी के रूप में बहुत मेधावी थे और हर परीक्षा में प्रथम आते थे।

---

3. राजेन्द्र प्रसाद ने वकालत कहाँ की? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद ने वकालत कलकत्ता उच्च न्यायालय से शुरू की और बाद में पटना में वकालत करने लगे।

---

4. राजेन्द्र प्रसाद आरंभ में किस नेता से प्रभावित थे? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद आरंभ में राष्ट्रीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे।

---

5. राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के शिष्य कैसे बने? पाठ्यपुस्तक

सन् 1917 में चंपारण सत्याग्रह के समय से राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के साथ जुड़ गए। गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से वे सबसे अधिक प्रभावित हुए और उनके सच्चे शिष्य बन गए।

---

6. राजेन्द्र प्रसाद कितनी बार और कब कांग्रेस अध्यक्ष बने? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने: सन् 1934, 1939 और 1947 में।

7. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष कब बने? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए।

8. राजेन्द्र प्रसाद भारत के राष्ट्रपति कब बने और कितने समय तक रहे? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद 26 जनवरी 1950 को भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक, सन् 1962 तक, इस पद पर रहे।

9. राजेन्द्र प्रसाद की सादगी के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद सादगी और सरलता के प्रतीक थे। अपनी सादगी के कारण वे किसान जैसा व्यक्तित्व पाकर भी भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

10. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार हमें किन बातों से बचना चाहिए? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार हमें सभी प्रकार की हिंसा से बचना चाहिए। हमें एक-दूसरे से घृणा करना और शत्रुता छोड़ देनी चाहिए।

11. राजेन्द्र प्रसाद परमाणु निरस्त्रीकरण के बारे में क्या मानते थे? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद मानते थे कि एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए प्रस्ताव पारित और स्वीकृत किए जाएँ।

birlaeducation.org

12. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार सच्चा प्रजातंत्र क्या है? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार जब तक प्रजातंत्र पूरे संसार में व्याप्त न हो जाए और संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता न प्रदान करे, तब तक वह सच्चा प्रजातंत्र नहीं है।

13. राजेन्द्र प्रसाद विश्व शांति के लिए क्या चाहते थे? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद चाहते थे कि सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित हो और युद्धों के कारणों को समाप्त किया जाए।

14. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार समस्त मानवता कैसी है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार समस्त मानवता एक है, भले ही उसमें जातिगत, संप्रदायगत और वर्गभेद हैं।

15. राजेन्द्र प्रसाद को भारत रत्न कब मिला? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद को सन् 1962 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

16. राजेन्द्र प्रसाद का निधन कब और कहाँ हुआ? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद का निधन 28 फरवरी 1963 को पटना में हुआ।

17. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा का नाम क्या है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा का नाम 'आत्मकथा' है।

18. राजेन्द्र प्रसाद ने देश को कितने समय तक मार्ग दिखाया? पाठ्यपुस्तक

राजेन्द्र प्रसाद ने बारह वर्षों से भी अधिक समय तक देश को भविष्य का मार्ग दिखाया।

---

19. राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ सादगी और सत्यनिष्ठा हैं। वे गांधीजी के प्रति निष्ठा और प्रजातंत्र में पूरे विश्वास के लिए भी जाने जाते हैं।

---

20. राजेन्द्र प्रसाद को 'राजेन्द्र बाबू' क्यों कहा जाता था? अतिरिक्त

लोग राजेन्द्र प्रसाद को प्रेम और आदर से 'राजेन्द्र बाबू' कहते थे, क्योंकि वे सादगी और सरलता से सबके अपने बन गए थे।

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. संकलित पाठ के आधार पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का परिचय दें। पाठ्यपुस्तक

अपनी सादगी और सरलता के कारण किसान जैसा व्यक्तित्व पाकर भी पहले राष्ट्रपति बनने का गौरव पाने वाले डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था। वे विद्यार्थी जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत की और बाद में पटना में वकालत करने लगे। आरंभ में वे गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे, पर बाद में महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से सबसे अधिक प्रभावित हुए और उनके सच्चे शिष्य बन गए। वे तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने और 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। 26 जनवरी 1950 को वे भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक इस पद पर रहे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला। 28 फरवरी 1963 को पटना में उनका निधन हो गया।

birlaeducation.org

---

2. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान में भारत के लिए जो आदर्श रखे, उनका वर्णन करें। पाठ्यपुस्तक

संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान में भारत के लिए ऊँचे आदर्श रखे। वे प्रजातंत्र में पूरा विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि जब तक प्रजातंत्र पूरे संसार में व्याप्त न हो जाए और संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता न प्रदान करे, तब तक वह सच्चा प्रजातंत्र नहीं है। वे चाहते थे कि सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित हो। वे एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के पक्ष में थे। वे चाहते थे कि युद्धों के कारणों को समाप्त किया जाए और परस्पर भय, अविश्वास, वैरभाव तथा असुरक्षा के कारणों को दूर किया जाए। वे मानते थे कि समस्त मानवता एक है, भले ही उसमें जातिगत, संप्रदायगत और वर्गभेद हैं। सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा और यह अनुभव करना होगा कि जब विश्व का कोई व्यक्ति या देश कष्ट उठाता है, तो सभी कष्ट उठाते हैं।

---

3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गांधी के निष्ठावान शिष्य थे, पठित पाठ के आधार पर लिखें। पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के निष्ठावान शिष्य थे। आरंभ में वे गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे, पर बाद में गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से सबसे अधिक प्रभावित हुए। दोनों का प्रभाव उनके जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। गांधीजी के सच्चे शिष्य के रूप में उन्होंने हमेशा कुछ बातों पर बल दिया: हम सभी प्रकार की हिंसा से बचें। सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित करने के लिए संघर्ष करें। एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए प्रस्ताव पारित और स्वीकृत किए जाएँ। हमें उन कारणों को भी समाप्त करना होगा जो युद्धों का कारण बनते हैं। यदि हम विश्व में एक शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में जीवित रहना

चाहते हैं, तो परस्पर भय, अविश्वास, वैरभाव तथा असुरक्षा के कारणों को दूर करना होगा। मनुष्य को यह अनुभव करना चाहिए कि समस्त मानवता एक है। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद ने गांधीजी के अहिंसा और शांति के आदर्शों को अपने जीवन में उतारा।

---

4. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के विश्व-शांति तथा परमाणु निरस्त्रीकरण के बारे में विचार लिखें। पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद विश्व-शांति के बड़े पक्षधर थे। उनका मानना था कि सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित करने के लिए संघर्ष करना चाहिए। वे एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के पक्ष में थे और चाहते थे कि इसके लिए प्रस्ताव पारित और स्वीकृत किए जाएँ। उनका कहना था कि हमें उन कारणों को भी समाप्त करना होगा जो युद्धों का कारण बनते हैं। यदि हम विश्व में एक शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में जीवित रहना चाहते हैं, तो परस्पर भय, अविश्वास, वैरभाव तथा असुरक्षा के कारणों को दूर करना होगा। वे मानते थे कि समस्त मानवता एक है और जब विश्व का कोई व्यक्ति या देश कष्ट उठाता है, तो सभी कष्ट उठाते हैं। इसलिए सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा, ज्ञान में वृद्धि करनी होगी और सभ्य जीवन जीना होगा।

---

5. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सच्चा प्रजातंत्र किसे मानते थे? विवेचना करें। पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रजातंत्र में पूरा-पूरा विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि जब तक प्रजातंत्र पूरे संसार में व्याप्त न हो जाए और संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता न प्रदान करे, तब तक वह सच्चा प्रजातंत्र नहीं है। सच्चा प्रजातंत्र केवल चुनाव कराने या बहुमत का शासन करने का नाम नहीं है। सच्चा प्रजातंत्र वह है जिसमें सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता हो, हिंसा न हो, और सबको समान रूप से प्रसन्नता मिले। इसके लिए सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा, ज्ञान में वृद्धि करनी होगी और सभ्य जीवन जीना होगा। मनुष्य को यह अनुभव करना चाहिए कि समस्त मानवता एक है, भले ही उसमें जातिगत, संप्रदायगत और वर्गभेद हैं। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद का प्रजातंत्र मानवता और शांति पर आधारित था।

birlaeducation.org

---

6. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व तथा कार्यों का उल्लेख करें। पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का व्यक्तित्व सादगी और सरलता का प्रतीक था। अपनी सादगी के कारण वे किसान जैसा व्यक्तित्व पाकर भी भारत के पहले राष्ट्रपति बने। वे विद्यार्थी जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत की और बाद में पटना में वकालत करने लगे। वे गांधीजी के निष्ठावान शिष्य थे। वे तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने और 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। 26 जनवरी 1950 को वे भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक इस पद पर रहे। वे विश्व-शांति, अहिंसा और परमाणु निरस्त्रीकरण के पक्षधर थे। वे सच्चे प्रजातंत्र में विश्वास रखते थे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद ने अपने व्यक्तित्व और कार्यों से देश को भविष्य का मार्ग दिखाया।

---

7. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन करें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था। वे विद्यार्थी जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता से कानून की पढ़ाई की और कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की, बाद में पटना में वकालत करने लगे। सन् 1917 में वे चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी के साथ थे। वे तीन बार, 1934, 1939 और 1947 में, कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 11 दिसंबर 1946 को वे संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। 26 जनवरी 1950 को वे भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक इस पद पर रहे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला। 28 फरवरी 1963 को पटना में उनका निधन हो गया।

---

8. राष्ट्रपति के रूप में राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका पर लिखें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद 26 जनवरी 1950 को भारत के पहले राष्ट्रपति बने। वे बारह वर्षों तक इस पद पर रहे, जो किसी भी भारतीय राष्ट्रपति का सबसे लंबा कार्यकाल है। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने संविधान की मर्यादा की रक्षा की और प्रजातंत्र को मजबूत बनाया। वे सादगी और सरलता के प्रतीक थे और राष्ट्रपति भवन में भी सादा जीवन जीते थे। उन्होंने देश को शांति, अहिंसा और मानवता का संदेश दिया। वे मानते थे कि सच्चा प्रजातंत्र वही है जो सभी समुदायों को प्रसन्नता दे। उनके कार्यकाल में भारत एक युवा गणतंत्र के रूप में स्थिर हुआ। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

---

9. संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में राजेन्द्र प्रसाद का योगदान लिखें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संविधान निर्माण की पूरी प्रक्रिया का संचालन किया। वे सभी सदस्यों की बात धैर्य से सुनते थे और सबको साथ लेकर चलते थे। उनके नेतृत्व में संविधान सभा ने भारत का संविधान तैयार किया, जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। संविधान में उन्होंने प्रजातंत्र, समानता, न्याय और स्वतंत्रता के आदर्शों को स्थान दिलाया। वे चाहते थे कि संविधान भारत के सभी समुदायों को प्रसन्नता दे। इस प्रकार संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में राजेन्द्र प्रसाद का योगदान भारत के इतिहास में अमर है।

---

10. राजेन्द्र प्रसाद और गांधीजी के संबंधों पर लिखें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद आरंभ में गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे, पर सन् 1917 में चंपारण सत्याग्रह के समय से वे गांधीजी के साथ जुड़ गए। गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से वे सबसे अधिक प्रभावित हुए और उनके सच्चे शिष्य बन गए। गांधीजी के अहिंसा, सत्य और शांति के आदर्शों को उन्होंने अपने जीवन में उतारा। वे गांधीजी के साथ चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में रहे। गांधीजी भी राजेन्द्र प्रसाद पर पूरा भरोसा करते थे। इसीलिए गांधीजी के निधन के बाद भी राजेन्द्र प्रसाद उनके आदर्शों पर चलते रहे। उनका संबंध गुरु और शिष्य का सच्चा उदाहरण है।

birlaeducation.org

---

11. राजेन्द्र प्रसाद की शिक्षा और वकालत के जीवन पर लिखें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद विद्यार्थी जीवन में बहुत मेधावी थे और हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता से कानून की पढ़ाई की। कानून की पढ़ाई पूरी करके उन्होंने कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। वे एक सफल वकील थे। बाद में वे पटना चले गए और वहाँ वकालत करने लगे। पर देशसेवा की भावना ने उन्हें वकालत छोड़कर राजनीति में आने को प्रेरित किया। सन् 1917 में चंपारण सत्याग्रह के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी और पूरा समय देशसेवा में लगा दिया। इस प्रकार उनकी शिक्षा और वकालत का जीवन देशसेवा की ओर बढ़ता गया।

---

12. चंपारण सत्याग्रह में राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका लिखें। अतिरिक्त

चंपारण सत्याग्रह सन् 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ। वहाँ नील की खेती करने वाले किसानों पर अंग्रेज बागान मालिक अत्याचार करते थे। महात्मा गांधी किसानों की समस्या जानने चंपारण गए। राजेन्द्र प्रसाद भी गांधीजी के साथ जुड़ गए और किसानों की सहायता में लग गए। उन्होंने किसानों की शिकायतें सुनीं और गांधीजी के साथ मिलकर जाँच में मदद की। चंपारण सत्याग्रह से ही राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के सच्चे शिष्य बने। इस सत्याग्रह के बाद उन्होंने वकालत छोड़ दी और पूरा समय देशसेवा में लगा दिया।

---

13. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार विश्व शांति कैसे स्थापित हो सकती है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार विश्व शांति तभी स्थापित हो सकती है जब सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित हो। हमें सभी प्रकार की हिंसा से बचना होगा। एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए प्रस्ताव पारित और स्वीकृत किए जाएँ। हमें उन कारणों

को भी समाप्त करना होगा जो युद्धों का कारण बनते हैं। यदि हम विश्व में एक शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में जीवित रहना चाहते हैं, तो परस्पर भय, अविश्वास, वैरभाव तथा असुरक्षा के कारणों को दूर करना होगा। मनुष्य को यह अनुभव करना चाहिए कि समस्त मानवता एक है। सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा, ज्ञान में वृद्धि करनी होगी और सभ्य जीवन जीना होगा। हम एक-दूसरे से घृणा करना और शत्रुता छोड़ दें तथा प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें।

---

14. राजेन्द्र प्रसाद के सादगीपूर्ण जीवन से हमें क्या सीख मिलती है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद का जीवन सादगी और सरलता का उदाहरण है। अपनी सादगी के कारण वे किसान जैसा व्यक्तित्व पाकर भी भारत के पहले राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी वे सादा जीवन जीते थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि बड़ा पद पाकर भी सादगी नहीं छोड़नी चाहिए। सच्ची महानता दिखावे में नहीं, सेवा और सादगी में है। उनका जीवन हमें यह भी सिखाता है कि मेहनत और लगन से गाँव का एक साधारण विद्यार्थी देश का राष्ट्रपति बन सकता है। विद्यार्थियों को उनसे मेहनत, सादगी और देशसेवा की प्रेरणा लेनी चाहिए।

---

15. राजेन्द्र प्रसाद के प्रजातंत्र संबंधी विचारों की विवेचना करें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद प्रजातंत्र में पूरा-पूरा विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि जब तक प्रजातंत्र पूरे संसार में व्याप्त न हो जाए और संसार के सभी समुदायों को प्रसन्नता न प्रदान करे, तब तक वह सच्चा प्रजातंत्र नहीं है। सच्चा प्रजातंत्र केवल चुनाव कराने या बहुमत का शासन करने का नाम नहीं है। सच्चा प्रजातंत्र वह है जिसमें सभी को समान अधिकार मिले, सबमें शांति और मित्रता हो, और हिंसा का कोई स्थान न हो। इसके लिए सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा और ज्ञान में वृद्धि करनी होगी। मनुष्य को यह अनुभव करना चाहिए कि समस्त मानवता एक है। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद का प्रजातंत्र मानवता और शांति पर आधारित था।

birlaeducation.org

---

16. राजेन्द्र प्रसाद को 'भारत के पहले राष्ट्रपति' के रूप में याद क्यों किया जाता है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में इसलिए याद किया जाता है, क्योंकि 26 जनवरी 1950 को जब भारत गणतंत्र बना, तो वे ही पहले राष्ट्रपति बने। वे बारह वर्षों तक इस पद पर रहे, जो किसी भी भारतीय राष्ट्रपति का सबसे लंबा कार्यकाल है। राष्ट्रपति बनने से पहले वे संविधान सभा के अध्यक्ष थे और संविधान निर्माण में उनकी बड़ी भूमिका थी। वे गांधीजी के निष्ठावान शिष्य थे और सादगी के प्रतीक थे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला। इस प्रकार पहले राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने युवा गणतंत्र को स्थिरता दी और प्रजातंत्र की नींव मजबूत की।

---

17. राजेन्द्र प्रसाद के मानवतावादी विचारों पर लिखें। अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के विचार मानवतावाद पर आधारित थे। वे मानते थे कि समस्त मानवता एक है, भले ही उसमें जातिगत, संप्रदायगत और वर्गभेद हैं। जब विश्व का कोई व्यक्ति या देश कष्ट उठाता है, तो सभी कष्ट उठाते हैं। इसलिए सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा, ज्ञान में वृद्धि करनी होगी और सभ्य जीवन जीना होगा। वे चाहते थे कि हम एक-दूसरे से घृणा करना और शत्रुता छोड़ दें तथा प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। वे सभी प्रकार की हिंसा से बचने पर बल देते थे। उनका मानवतावाद गांधीजी के अहिंसा और शांति के आदर्शों से जुड़ा हुआ था।

---

18. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन से विद्यार्थियों को क्या प्रेरणा मिलती है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के जीवन से विद्यार्थियों को कई प्रेरणाएँ मिलती हैं। पहली प्रेरणा यह है कि मेहनत और लगन से पढ़ाई में प्रथम आया जा सकता है। वे हर परीक्षा में प्रथम आते थे। दूसरी प्रेरणा यह है कि सादगी और सरलता से भी महान बना जा सकता है।

तीसरी प्रेरणा यह है कि देशसेवा सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने सफल वकालत छोड़कर देशसेवा को अपनाया। चौथी प्रेरणा यह है कि अहिंसा और शांति से बड़े से बड़ा काम किया जा सकता है। पाँचवीं प्रेरणा यह है कि सच्चा प्रजातंत्र सबको प्रसन्नता देने वाला होता है। विद्यार्थियों को उनसे मेहनत, सादगी और देशसेवा की प्रेरणा लेनी चाहिए।

---

19. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जीवन-परिचय लिखिए। पाठ्यपुस्तक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था। वे विद्यार्थी जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने कलकत्ता से कानून की पढ़ाई की और कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की, बाद में पटना में वकालत करने लगे। आरंभ में वे गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित थे, पर बाद में महात्मा गांधी के सच्चे शिष्य बन गए। सन् 1917 में वे चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी के साथ थे। वे तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने और 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। 26 जनवरी 1950 को वे भारत के पहले राष्ट्रपति बने और बारह वर्षों तक इस पद पर रहे। सन् 1962 में उन्हें भारत रत्न मिला। 28 फरवरी 1963 को पटना में उनका निधन हो गया।

---

20. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार युद्धों के कारणों को कैसे समाप्त किया जा सकता है? अतिरिक्त

राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार युद्धों के कारणों को समाप्त करने के लिए सबसे पहले सभी प्रकार की हिंसा से बचना होगा। सभी राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता स्थापित करने के लिए संघर्ष करना होगा। एकपक्षीय परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए प्रस्ताव पारित और स्वीकृत किए जाएँ। परस्पर भय, अविश्वास, वैरभाव तथा असुरक्षा के कारणों को दूर करना होगा। मनुष्य को यह अनुभव करना चाहिए कि समस्त मानवता एक है। सभी राष्ट्रों को अपनी सोच का क्षितिज व्यापक बनाना होगा, ज्ञान में वृद्धि करनी होगी और सभ्य जीवन जीना होगा। हम एक-दूसरे से घृणा करना और शत्रुता छोड़ दें तथा प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। तभी युद्धों के कारण समाप्त हो सकते हैं।

birlaeducation.org
